

भारत-नेपाल संबंधों में बदलती कूटनीति एवं विदेश नीति का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० प्रशांत कुमार

शोधार्थी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध-सार

भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विशेष महत्त्व रखते हैं। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक संबंधों की गहरी परंपरा रही है। खुली सीमा, पारिवारिक संबंध, व्यापार, रोजगार, सुरक्षा सहयोग तथा साझा धार्मिक विरासत ने भारत-नेपाल संबंधों को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। वर्ष 1950 की भारत-नेपाल शांति एवं मैत्री संधि ने द्विपक्षीय संबंधों को औपचारिक आधार दिया, लेकिन समय के साथ दोनों देशों की राजनीतिक प्राथमिकताओं, सुरक्षा संबंधी चिंताओं और विदेश नीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। विशेष रूप से वर्ष 2015 में नेपाल के नए संविधान के निर्माण के समय उत्पन्न तनाव, सीमा विवाद, चीन के बढ़ते प्रभाव, आर्थिक निर्भरता तथा ऊर्जा और संपर्क परियोजनाओं ने द्विपक्षीय कूटनीति को प्रभावित किया है। भारत की 'पड़ोस प्रथम नीति' के अंतर्गत नेपाल के साथ संपर्क, व्यापार, ऊर्जा, विकास सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए हैं। दूसरी ओर, नेपाल ने अपनी संप्रभुता, राष्ट्रीय हितों और रणनीतिक स्वायत्तता को सुरक्षित रखते हुए भारत तथा चीन दोनों के साथ संतुलित संबंध विकसित करने की नीति अपनाई है। हाल के वर्षों में विद्युत व्यापार, रेल संपर्क, पेट्रोलियम पाइपलाइन, सीमा प्रबंधन और उच्चस्तरीय राजनीतिक संवाद ने सहयोग की नई संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। इसके बावजूद सीमा विवाद, संधि की समीक्षा, व्यापार असंतुलन और राजनीतिक अविश्वास जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य भारत-नेपाल संबंधों में कूटनीतिक एवं विदेश नीतिगत बदलावों का ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भ में समीक्षात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों, आधिकारिक दस्तावेजों और उपलब्ध अकादमिक साहित्य पर आधारित है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि दोनों देशों के संबंधों को स्थायी और प्रभावी बनाने के लिए समानता, पारस्परिक सम्मान, संवेदनशील कूटनीति, आर्थिक परस्पर निर्भरता और संस्थागत संवाद को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

बीज शब्द : भारत-नेपाल संबंध, कूटनीति, विदेश नीति, सीमा विवाद, ऊर्जा सहयोग एवं रणनीतिक स्वायत्तता इत्यादि

भूमिका

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में पड़ोसी देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों का विशेष महत्त्व होता है। भौगोलिक निकटता, आर्थिक परस्पर निर्भरता, साझा इतिहास और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ किसी भी देश की विदेश नीति को प्रभावित करती हैं। भारत और नेपाल के संबंध इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भारत और

नेपाल के बीच केवल औपचारिक राजनयिक संबंध ही नहीं हैं, बल्कि दोनों देशों के समाजों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी और पारिवारिक संबंध भी विकसित हुए हैं। दोनों देशों के नागरिकों का सीमा पार आवागमन, रोजगार, व्यापार और सामाजिक संपर्क इस संबंध को अन्य द्विपक्षीय संबंधों से अलग पहचान प्रदान करते हैं।

नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत और चीन के बीच स्थित एक हिमालयी देश के रूप में उसकी विदेश नीति को विशेष रूप से प्रभावित करती है। नेपाल के लिए भारत के साथ अच्छे संबंध आर्थिक संपर्क, व्यापार, पारगमन, रोजगार और ऊर्जा सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। दूसरी ओर, भारत के लिए नेपाल की स्थिरता सीमा सुरक्षा, हिमालयी क्षेत्र, क्षेत्रीय संपर्क और दक्षिण एशियाई सहयोग से जुड़ी हुई है। इस प्रकार दोनों देशों के हितों में पर्याप्त समानता होने के बावजूद उनकी राजनीतिक प्राथमिकताओं और रणनीतिक दृष्टिकोणों में अंतर दिखाई देता है।¹

भारत-नेपाल संबंधों की प्रकृति समय के साथ बदलती रही है। स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के बीच निकटता और सहयोग की भावना प्रमुख थी। वर्ष 1950 की शांति एवं मैत्री संधि ने इस संबंध को औपचारिक आधार प्रदान किया। हालाँकि, बदलती अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों, नेपाल की घरेलू राजनीतिक प्रक्रियाओं, भारत की क्षेत्रीय रणनीति और चीन की बढ़ती उपस्थिति ने इस संबंध को अधिक जटिल बना दिया। वर्ष 2015 में नेपाल के संविधान की घोषणा और उसके बाद सीमा पर आपूर्ति बाधित होने से संबंधित विवाद ने द्विपक्षीय संबंधों में गंभीर तनाव उत्पन्न किया। नेपाल में इस घटना को व्यापक रूप से भारतीय दबाव के रूप में देखा गया, जबकि भारत ने सीमा पर उत्पन्न व्यवधान के लिए अपनी प्रत्यक्ष भूमिका से इनकार किया। इस घटनाक्रम ने नेपाल में भारत के प्रति जनमत और राजनीतिक विमर्श को प्रभावित किया। इसके बाद सीमा मानचित्र संबंधी विवाद, राजनीतिक अविश्वास और चीन के साथ नेपाल के बढ़ते संपर्क ने भारत-नेपाल संबंधों में नए आयाम जोड़े। फिर भी दोनों देशों ने सहयोग के रास्ते बंद नहीं किए। विद्युत व्यापार, सड़क एवं रेल संपर्क, पेट्रोलियम पाइपलाइन, व्यापारिक सुविधाओं और विकास परियोजनाओं में सहयोग ने यह स्पष्ट किया कि राजनीतिक मतभेदों के बावजूद द्विपक्षीय संबंधों में व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं।²

अध्ययन की समस्या एवं महत्व

भारत और नेपाल के बीच गहरे ऐतिहासिक तथा सामाजिक संबंध होने के बावजूद समय-समय पर कूटनीतिक तनाव उत्पन्न होते रहे हैं। यह स्थिति एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है कि जब दोनों देशों के हित अनेक क्षेत्रों में परस्पर जुड़े हुए हैं, तो राजनीतिक अविश्वास और रणनीतिक मतभेद बार-बार क्यों उभरते हैं। भारत की क्षेत्रीय शक्ति और नेपाल की भौगोलिक स्थिति के कारण दोनों देशों के संबंधों में असमान शक्ति-संतुलन दिखाई देता है। भारत के लिए नेपाल एक महत्वपूर्ण पड़ोसी है, जबकि नेपाल अपनी विदेश नीति में स्वतंत्र निर्णय लेने और किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता से बचने को महत्व देता है। यही अंतर कई बार कूटनीतिक असहमतियों का कारण बनता है। इस अध्ययन का महत्व इस बात में है कि यह भारत-नेपाल संबंधों को केवल ऐतिहासिक मित्रता के आधार पर नहीं देखता, बल्कि समकालीन भू-राजनीति, आर्थिक हितों, सीमा संबंधी विवादों और विदेश नीति के परिवर्तनों के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन दक्षिण एशिया में पड़ोसी देशों के बीच विश्वास निर्माण, क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग की संभावनाओं को समझने में भी उपयोगी है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

- भारत-नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा कूटनीतिक विकास का अध्ययन करना।
- दोनों देशों की विदेश नीति में आए प्रमुख परिवर्तनों और उनके कारणों का विश्लेषण करना।

- चीन के बढ़ते प्रभाव, सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव समझना।
- व्यापार, ऊर्जा, संपर्क तथा सुरक्षा सहयोग की संभावनाओं और सीमाओं का मूल्यांकन करना।
- भारत-नेपाल संबंधों को अधिक स्थिर, संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभकारी बनाने के उपाय प्रस्तुत करना।

साहित्य की समीक्षा

भारत-नेपाल संबंधों पर उपलब्ध साहित्य में ऐतिहासिक मित्रता, आर्थिक निर्भरता, सीमा विवाद, चीन की भूमिका और क्षेत्रीय कूटनीति जैसे विषयों पर पर्याप्त चर्चा मिलती है। विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दोनों देशों के संबंधों को केवल सांस्कृतिक निकटता के आधार पर नहीं समझा जा सकता है इनमें शक्ति-संतुलन, घरेलू राजनीति और आर्थिक हितों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

Taneja एवं अन्य लेखकों (2020)³ का अध्ययन भारत-नेपाल व्यापार और निवेश के आर्थिक आयामों पर केंद्रित है। यह शोध बताता है कि दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने की व्यापक संभावनाएँ हैं, लेकिन आर्थिक सहयोग का प्रभाव व्यापारिक संरचना, निवेश और नीतिगत व्यवस्थाओं पर निर्भर करता है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र के आर्थिक कूटनीति संबंधी विश्लेषण के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

Gurung और Ranjan (2020)⁴ ने भारत-नेपाल संबंधों में उत्पन्न तनाव और उसके बाद संबंधों को सामान्य बनाने के प्रयासों का अध्ययन किया। उनका विश्लेषण वर्ष 2019 के सीमा मानचित्र विवाद और वर्ष 2020 में दोनों देशों के बीच हुए कूटनीतिक संपर्कों के महत्व को स्पष्ट करता है। इससे पता चलता है कि राजनीतिक तनाव के बावजूद संवाद की प्रक्रिया संबंधों को सामान्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

Thapliyal (2020)⁵ ने भारत-नेपाल संबंधों को नई दिल्ली के दृष्टिकोण से विश्लेषित किया। उनके अध्ययन में वर्ष 2014 के बाद प्रारंभिक कूटनीतिक निकटता, वर्ष 2015 के तनाव और चीन के बढ़ते प्रभाव पर चर्चा की गई है। यह दृष्टिकोण समझने में सहायता करता है कि विदेश नीति के उद्देश्यों और घरेलू राजनीतिक घटनाओं के बीच किस प्रकार अंतःक्रिया होती है।

Nayak (2020, पुनर्प्रकाशित 2023)⁶ का कालापानी विवाद पर केंद्रित अध्ययन सीमा संबंधी असहमति के ऐतिहासिक तथा रणनीतिक पहलुओं को स्पष्ट करता है। इसमें यह रेखांकित किया गया है कि लंबे समय से अनसुलझे सीमा विवाद केवल क्षेत्रीय प्रश्न नहीं रहते, बल्कि आर्थिक संबंधों और सुरक्षा सहयोग को भी प्रभावित कर सकते हैं।

Shekhawat (2024)⁷ ने भारत-नेपाल संबंधों के पिछले दशक की समीक्षा करते हुए संपर्क परियोजनाओं, आर्थिक सहयोग और बदलती क्षेत्रीय प्राथमिकताओं पर ध्यान दिया। उनके विश्लेषण से संकेत मिलता है कि दोनों देश विवादों के बावजूद व्यावहारिक सहयोग को बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

इन अध्ययनों के अतिरिक्त भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के द्विपक्षीय संबंध संबंधी दस्तावेज व्यापार, ऊर्जा, सुरक्षा, रेल संपर्क और विकास सहयोग के आधिकारिक पक्ष को समझने में उपयोगी हैं। वर्ष 2024 के द्विपक्षीय विवरण में दीर्घकालिक विद्युत व्यापार, सीमा अवसंरचना और कई संस्थागत तंत्रों का उल्लेख मिलता है। समग्र रूप से उपलब्ध साहित्य भारत-नेपाल संबंधों के अलग-अलग आयामों का विश्लेषण करता है। प्रस्तुत शोधपत्र इन आयामों को एक साथ रखकर कूटनीति, विदेश नीति, घरेलू राजनीतिक प्रक्रियाओं और आर्थिक परस्पर निर्भरता के बीच संबंधों को समझने का प्रयास करता है। इसकी प्रमुख विश्लेषणात्मक विशेषता सहयोग और तनाव को एक ही द्विपक्षीय ढाँचे में देखना है।

भारत-नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और नेपाल के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक है। दोनों देशों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संपर्क प्राचीन काल से विकसित हुए हैं। नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ मंदिर तथा भारत में स्थित काशी, अयोध्या और अन्य धार्मिक स्थलों के बीच श्रद्धालुओं का आवागमन दोनों समाजों की सांस्कृतिक निकटता को दर्शाता है। सीमावर्ती क्षेत्रों में भाषायी समानता, वैवाहिक संबंध और व्यापारिक संपर्क भी द्विपक्षीय संबंधों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। आधुनिक काल में वर्ष 1950 की भारत-नेपाल शांति एवं मैत्री संधि ने संबंधों को औपचारिक स्वरूप प्रदान किया। इस संधि में शांति, मैत्री और एक-दूसरे की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान को आधार बनाया गया। इसके साथ ही दोनों देशों के बीच आर्थिक और सामाजिक संपर्कों के विस्तार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ विकसित हुईं।⁸

हालाँकि, संधि के प्रावधानों और उनके व्यावहारिक प्रभावों को लेकर नेपाल में समय-समय पर बहस होती रही है। नेपाल के विभिन्न राजनीतिक समूहों का मानना रहा है कि बदलती अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप संधि की समीक्षा आवश्यक है। दूसरी ओर, भारत के लिए यह संधि दोनों देशों के विशेष संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है। इस अंतर को समझना आवश्यक है, क्योंकि संधि के प्रति दोनों देशों की अलग-अलग धारणाएँ उनकी कूटनीतिक प्राथमिकताओं को प्रभावित करती हैं। नेपाल में राजतंत्र से लोकतांत्रिक व्यवस्था की ओर संक्रमण, माओवादी आंदोलन, वर्ष 2008 में गणतंत्र की स्थापना और संघीय लोकतांत्रिक व्यवस्था का विकास उसकी विदेश नीति के संदर्भ को बदलने वाली प्रमुख घटनाएँ थीं। इन परिवर्तनों के कारण नेपाल में राष्ट्रीय संप्रभुता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और विदेश नीति की स्वतंत्रता पर अधिक बल दिया जाने लगा। भारत ने नेपाल के राजनीतिक संक्रमण के विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी नेपाल की घरेलू राजनीति में भारत की भूमिका को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण सामने आते रहे हैं। कुछ समूह भारत को विकास और स्थिरता का प्रमुख साझेदार मानते हैं, जबकि अन्य समूह भारतीय प्रभाव को नेपाल की स्वतंत्र विदेश नीति के लिए चुनौती के रूप में देखते हैं। यही विविध दृष्टिकोण भारत-नेपाल संबंधों की जटिलता को स्पष्ट करते हैं।

भारत की विदेश नीति और नेपाल के प्रति दृष्टिकोण

भारत की नेपाल नीति को उसकी व्यापक पड़ोसी नीति, क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक संपर्क के संदर्भ में समझा जा सकता है। भारत के लिए नेपाल की राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि दोनों देशों के बीच खुली सीमा और व्यापक सामाजिक संपर्क मौजूद हैं। नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता या सीमा प्रबंधन से संबंधित समस्याएँ भारत के सीमावर्ती राज्यों को भी प्रभावित कर सकती हैं।

पड़ोस प्रथम नीति

भारत की 'पड़ोस प्रथम नीति' का उद्देश्य पड़ोसी देशों के साथ सहयोग बढ़ाना, विकास साझेदारी को मजबूत करना और क्षेत्रीय संपर्क को प्रोत्साहित करना है। नेपाल इस नीति का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत भारत ने सड़क, रेल, पेट्रोलियम पाइपलाइन, एकीकृत जाँच चौकियों, विद्युत व्यापार और अन्य विकास परियोजनाओं में सहयोग बढ़ाने का प्रयास किया है। भारत सरकार के द्विपक्षीय विवरण के अनुसार, भारत और नेपाल के बीच व्यापार, सुरक्षा, ऊर्जा, जल संसाधन तथा संपर्क से संबंधित अनेक संस्थागत तंत्र कार्यरत हैं। इन तंत्रों का उद्देश्य केवल राजनीतिक संवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक समस्याओं के समाधान और परियोजनाओं के क्रियान्वयन को भी प्रोत्साहित करना है।

फिर भी पड़ोस प्रथम नीति की सफलता केवल परियोजनाओं की संख्या से नहीं मापी जा सकती। नेपाल में इस नीति की स्वीकार्यता इस बात पर भी निर्भर करती है कि सहयोग स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप है या नहीं, परियोजनाएँ समय पर पूरी होती हैं या नहीं और निर्णय लेने की प्रक्रिया में नेपाली पक्ष को पर्याप्त भागीदारी मिलती है या नहीं।

विकास साझेदारी और कूटनीति

भारत ने नेपाल में अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा और सामुदायिक विकास से संबंधित अनेक परियोजनाओं में सहयोग किया है। विकास सहायता विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण साधन है, क्योंकि इससे आर्थिक संपर्क बढ़ता है और दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी विकसित हो सकती है। वर्ष 2018 में भारत और नेपाल के प्रधानमंत्रियों की बैठक में समानता, पारस्परिक विश्वास, सम्मान और लाभ के आधार पर संबंधों को आगे बढ़ाने पर बल दिया गया था। इस बैठक में व्यापार, कृषि, रेल संपर्क और अंतर्देशीय जलमार्ग जैसे विषयों पर सहयोग बढ़ाने की दिशा में सहमति व्यक्त की गई।⁹

इस प्रकार भारत की विदेश नीति में नेपाल के प्रति विकास-केंद्रित कूटनीति का महत्व बढ़ा है। हालाँकि, विकास सहयोग को अधिक प्रभावी बनाने के लिए परियोजनाओं की पारदर्शिता, स्थानीय सहभागिता और समयबद्ध क्रियान्वयन आवश्यक हैं।

नेपाल की बदलती विदेश नीति

नेपाल की विदेश नीति का एक प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा करते हुए आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अवसरों को बढ़ाना है। भौगोलिक दृष्टि से भारत और चीन के बीच स्थित होने के कारण नेपाल को अपनी विदेश नीति में दोनों देशों के साथ संबंधों का संतुलन बनाए रखने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

रणनीतिक स्वायत्तता की आवश्यकता

नेपाल की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ है कि देश अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेने में स्वतंत्र रहे। नेपाल के लिए भारत के साथ सहयोग आवश्यक है, लेकिन वह चीन सहित अन्य देशों के साथ भी आर्थिक और कूटनीतिक संबंध विकसित करना चाहता है। यह नीति केवल किसी एक देश के विरुद्ध कदम नहीं है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियों के विविधीकरण का प्रयास भी हो सकती है। नेपाल में विभिन्न राजनीतिक दलों की विदेश नीति संबंधी प्राथमिकताओं में अंतर दिखाई देता है। सरकारों के बदलने के साथ भारत और चीन के प्रति कूटनीतिक दृष्टिकोण की प्राथमिकताओं में भी परिवर्तन हो सकता है। इससे द्विपक्षीय संबंधों में निरंतरता बनाए रखने की चुनौती उत्पन्न होती है। रणनीतिक स्वायत्तता को भारत-विरोधी नीति के समान मानना उचित नहीं होगा। नेपाल के लिए दोनों पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक सहयोग और स्वतंत्र निर्णय क्षमता का संयोजन महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार भारत को भी नेपाल के बहुपक्षीय संबंधों और विकास साझेदारियों को उसकी संप्रभु विदेश नीति के सामान्य हिस्से के रूप में समझना चाहिए।

चीन के साथ संबंधों का विस्तार

चीन ने पिछले कुछ वर्षों में नेपाल के साथ अवसंरचना, निवेश और संपर्क परियोजनाओं के माध्यम से अपने संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया है। नेपाल ने भी चीन के साथ आर्थिक सहयोग बढ़ाने और व्यापारिक संपर्कों के विकल्प विकसित करने में रुचि दिखाई है। वर्ष 2017 में नेपाल का चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव से जुड़ना

इस दिशा में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था। चीन के साथ बढ़ते संबंध भारत के लिए रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हिमालयी क्षेत्र में सुरक्षा और संपर्क के प्रश्न भारत की विदेश नीति से जुड़े हुए हैं। हालाँकि, नेपाल की चीन नीति को केवल भारत और चीन की प्रतिस्पर्धा के रूप में देखना उसके स्वतंत्र राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करना होगा। वर्ष 2024 में नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली की चीन यात्रा ने यह संकेत दिया कि नेपाल अपनी आर्थिक और कूटनीतिक साझेदारियों को विविध बनाने का प्रयास कर रहा है। इस यात्रा के संदर्भ में बुनियादी ढाँचे और बेल्ट एंड रोड परियोजनाओं पर चर्चा हुई।

नेपाल के लिए चीन के साथ सहयोग के अवसर मौजूद हैं, लेकिन परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहार्यता, वित्तीय शर्तों, ऋण प्रबंधन और भौगोलिक सीमाओं का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन भी आवश्यक है। भारत के लिए प्रभावी प्रतिक्रिया का रास्ता केवल रणनीतिक प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि बेहतर संपर्क, विश्वसनीय विकास सहयोग और सम्मानपूर्ण कूटनीति है।

वर्ष 2015 के बाद भारत-नेपाल संबंधों में कूटनीतिक बदलाव

वर्ष 2015 भारत-नेपाल संबंधों में एक निर्णायक मोड़ के रूप में देखा जाता है। नेपाल ने सितंबर 2015 में नया संविधान लागू किया। संविधान के कुछ प्रावधानों को लेकर नेपाल के मधेशी समुदाय और अन्य समूहों में असंतोष उत्पन्न हुआ। उसी समय भारत-नेपाल सीमा पर माल की आपूर्ति और आवागमन गंभीर रूप से बाधित हुए। नेपाल में इस व्यवधान को भारतीय आर्थिक नाकेबंदी के रूप में देखा गया, जबकि भारत ने अपनी प्रत्यक्ष भूमिका से इनकार किया और सीमा पर विरोध तथा अवरोधों की स्थिति को प्रमुख कारण बताया। इस घटनाक्रम के कारण नेपाल में भारत के प्रति अविश्वास बढ़ा और राष्ट्रीय संप्रभुता से संबंधित बहस तेज हुई। इसके परिणामस्वरूप नेपाल ने ऊर्जा और पारगमन के वैकल्पिक स्रोतों की तलाश पर अधिक ध्यान दिया। भारत के लिए भी यह घटना इस बात का संकेत थी कि ऐतिहासिक निकटता अपने आप राजनीतिक विश्वास की गारंटी नहीं देती। वर्ष 2019 में भारत द्वारा नया राजनीतिक मानचित्र जारी किए जाने और नवंबर 2019 में नेपाल द्वारा कालापानी, लिपुलेख तथा लिम्पियाधुरा को अपने मानचित्र में शामिल किए जाने के बाद सीमा विवाद और गंभीर हुआ। दोनों देशों के बीच इस क्षेत्र की संप्रभुता और सीमा निर्धारण को लेकर मतभेद बने रहे। यह विवाद दिखाता है कि ऐतिहासिक दस्तावेजों, मानचित्रों और भौगोलिक व्याख्याओं पर असहमति द्विपक्षीय संबंधों के व्यापक क्षेत्र को प्रभावित कर सकती है। इसके बावजूद वर्ष 2020 में दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संपर्कों के माध्यम से तनाव कम करने के प्रयास हुए। यह स्पष्ट हुआ कि सीमा विवादों के समाधान के लिए राजनीतिक संवाद और संस्थागत प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं। सीमा विवाद का दीर्घकालिक समाधान तभी संभव है, जब दोनों देश ऐतिहासिक साक्ष्यों, पारस्परिक सहमति और शांतिपूर्ण वार्ता के आधार पर आगे बढ़ें। वर्ष 2015 के बाद के अनुभव ने दोनों देशों की कूटनीति को अधिक व्यावहारिक बनाया। भारत ने संपर्क और आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाने पर ध्यान दिया, जबकि नेपाल ने अपने विकल्पों को विविध बनाने तथा भारत पर निर्भरता के जोखिम को कम करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस प्रकार दोनों देशों की विदेश नीति में सहयोग और सावधानी का मिश्रित दृष्टिकोण दिखाई देता है।

आर्थिक कूटनीति और व्यापारिक संबंध

भारत-नेपाल संबंधों में आर्थिक कूटनीति का महत्व अत्यधिक है। भारत नेपाल का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है और नेपाल के आयात, निर्यात, निवेश तथा पारगमन व्यवस्था में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण है। भौगोलिक निकटता, सड़क संपर्क और खुली सीमा ने दोनों देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है। हालाँकि, दोनों देशों के बीच व्यापार की संरचना असमान है। नेपाल का भारत से आयात उसकी आर्थिक आवश्यकताओं, औद्योगिक

संरचना और उपभोक्ता बाजार से जुड़ा है। दूसरी ओर, नेपाल अपने निर्यात को बढ़ाने और व्यापार घाटे को कम करने की चुनौती का सामना करता है। इसलिए आर्थिक संबंधों को केवल व्यापार की मात्रा से नहीं, बल्कि उत्पादन क्षमता, रोजगार, निवेश और निर्यात विविधीकरण के आधार पर भी देखना चाहिए। भारत-नेपाल आर्थिक सहयोग में सीमा अवसंरचना का विशेष महत्व है। एकीकृत जाँच चौकियाँ, रेल संपर्क और पेट्रोलियम पाइपलाइन व्यापार तथा परिवहन लागत को कम करने में सहायक हो सकते हैं। वर्ष 2018 में बिरगंज एकीकृत जाँच चौकी और मोतिहारी-अमलेखगंज पेट्रोलियम पाइपलाइन से संबंधित प्रगति ने इस प्रकार के सहयोग की उपयोगिता को रेखांकित किया।¹⁰

आर्थिक कूटनीति की सफलता के लिए आवश्यक है कि परियोजनाओं से दोनों देशों के नागरिकों को प्रत्यक्ष लाभ मिले। नेपाल में स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, निर्यात क्षमता में वृद्धि, व्यापारिक प्रक्रियाओं का सरलीकरण और सीमा पर सुविधाओं का विस्तार संबंधों को अधिक संतुलित बना सकते हैं। भारत के लिए भी एक समृद्ध और स्थिर नेपाल क्षेत्रीय आर्थिक संपर्क तथा सुरक्षा की दृष्टि से लाभकारी है।

ऊर्जा कूटनीति और जलविद्युत सहयोग

ऊर्जा क्षेत्र भारत-नेपाल संबंधों में सहयोग की एक प्रमुख संभावना के रूप में उभरा है। नेपाल में जलविद्युत उत्पादन की पर्याप्त संभावनाएँ हैं, जबकि भारत की ऊर्जा माँग और बिजली बाजार नेपाली विद्युत के लिए अवसर प्रदान करते हैं। यदि उत्पादन, प्रसारण और व्यापार संबंधी व्यवस्थाओं का प्रभावी विकास किया जाए, तो दोनों देशों को आर्थिक लाभ मिल सकता है। जनवरी 2024 में भारत और नेपाल के बीच दीर्घकालिक विद्युत व्यापार से संबंधित समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। भारत ने अगले दस वर्षों में नेपाल से विद्युत आयात को बढ़ाकर 10,000 मेगावाट तक पहुँचाने की दिशा में प्रयास करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। यह लक्ष्य दोनों देशों के ऊर्जा सहयोग में दीर्घकालिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।¹¹

विद्युत व्यापार नेपाल के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने, जलविद्युत परियोजनाओं में निवेश आकर्षित करने और उत्पादन क्षमता बढ़ाने का अवसर प्रस्तुत करता है। भारत के लिए यह ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण और क्षेत्रीय विद्युत बाजार के विकास में सहायक हो सकता है। फिर भी परियोजनाओं के पर्यावरणीय प्रभाव, वित्तीय व्यवहार्यता, प्रसारण नेटवर्क और मौसमी उत्पादन में अंतर को ध्यान में रखना आवश्यक है। ऊर्जा कूटनीति को स्थायी बनाने के लिए दीर्घकालिक खरीद समझौते, पारदर्शी मूल्य निर्धारण, परियोजना वित्तपोषण और समयबद्ध क्रियान्वयन महत्वपूर्ण हैं। नेपाल की उत्पादन क्षमता और भारत की बाजार आवश्यकताओं के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित होने पर ऊर्जा सहयोग राजनीतिक विश्वास को मजबूत करने का साधन बन सकता है।

सीमा प्रबंधन, सुरक्षा एवं रक्षा कूटनीति

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा व्यवस्था द्विपक्षीय संबंधों की एक विशिष्ट विशेषता है। यह व्यवस्था दोनों देशों के नागरिकों को आवागमन, रोजगार, व्यापार और पारिवारिक संपर्क की व्यापक सुविधा प्रदान करती है। इसके साथ ही खुली सीमा के कारण अवैध व्यापार, मानव तस्करी, जाली मुद्रा, मादक पदार्थों की तस्करी और अन्य सीमापार अपराधों से निपटने की आवश्यकता भी बनी रहती है। भारत और नेपाल की सुरक्षा चिंताएँ केवल सैन्य मामलों तक सीमित नहीं हैं। प्राकृतिक आपदाएँ, बाढ़, भूकंप, सीमा पर अवसंरचना, आपराधिक गतिविधियाँ और सीमावर्ती समुदायों की सुरक्षा भी द्विपक्षीय सहयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इसलिए सीमा प्रबंधन में सुरक्षा और नागरिकों की सुविधाओं के बीच संतुलन आवश्यक है। जुलाई 2025 में भारत और नेपाल के गृह सचिव स्तर की वार्ता में सीमा प्रबंधन, सीमा स्तंभों के रखरखाव, सीमापार आपराधिक गतिविधियों, एकीकृत जाँच चौकियों, सड़क एवं रेल संपर्क

तथा आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर चर्चा हुई। दोनों पक्षों ने सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने पर सहमति व्यक्त की। यह घटनाक्रम दर्शाता है कि द्विपक्षीय कूटनीति में संस्थागत संवाद का महत्व बना हुआ है। सीमा प्रबंधन के लिए स्थानीय प्रशासन, सुरक्षा एजेंसियों और सीमावर्ती समुदायों के बीच समन्वय आवश्यक है। सीमा से संबंधित किसी विवाद को राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित रखने के बजाय तकनीकी समितियों और वार्ता के माध्यम से सुलझाना अधिक उपयोगी होगा। रक्षा सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों की सेनाओं के बीच लंबे समय से संपर्क और संयुक्त सैन्य अभ्यास की परंपरा रही है। यह सहयोग विश्वास निर्माण और व्यावहारिक समन्वय में सहायता करता है। हालाँकि, रक्षा संबंधों की स्थिरता के लिए दोनों देशों की संप्रभुता, राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं और स्वतंत्र विदेश नीति का सम्मान करना आवश्यक है।

कूटनीतिक संबंधों की प्रमुख चुनौतियाँ

भारत-नेपाल संबंधों में सहयोग की व्यापक संभावनाओं के बावजूद कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं :-

- पहली चुनौती : विश्वास की कमी : वर्ष 2015 की घटनाओं और सीमा विवादों ने नेपाल में भारत के प्रति संदेह को बढ़ाया। दूसरी ओर, भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ भी उसकी नेपाल नीति को प्रभावित करती हैं। ऐसी परिस्थितियों में दोनों देशों के बीच विश्वास निर्माण निरंतर संवाद पर निर्भर करता है।
- दूसरी चुनौती : शक्ति असमानता : भारत आर्थिक, जनसंख्या और सामरिक दृष्टि से नेपाल से बड़ा देश है। इस असमानता के कारण नेपाल में द्विपक्षीय संबंधों को लेकर संवेदनशीलता दिखाई देती है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी क्षेत्रीय शक्ति का उपयोग सहयोग को बढ़ावा देने के लिए करे, जबकि नेपाल को भी द्विपक्षीय समझौतों में व्यावहारिक सहयोग और पारस्परिक उत्तरदायित्व पर ध्यान देना चाहिए।
- तीसरी चुनौती : सीमा विवाद : कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा जैसे विवाद दोनों देशों की राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हुए हैं। इन प्रश्नों पर सार्वजनिक भावनाएँ तीव्र हो सकती हैं, जिससे समझौते की संभावनाएँ कठिन हो जाती हैं। फिर भी ऐतिहासिक दस्तावेजों, सीमा संबंधी प्रमाणों और शांतिपूर्ण वार्ता के माध्यम से समाधान तलाशना आवश्यक है।
- चौथी चुनौती : चीन का बढ़ता प्रभाव : नेपाल चीन के साथ आर्थिक और संपर्क संबंधों का विस्तार करना चाहता है, जबकि भारत हिमालयी क्षेत्र में अपनी सुरक्षा और रणनीतिक हितों को महत्व देता है। यदि दोनों देश नेपाल के स्वतंत्र निर्णयों को लेकर परस्पर अविश्वास की नीति अपनाते हैं, तो सहयोग के अवसर सीमित हो सकते हैं।
- पाँचवीं चुनौती : आर्थिक असंतुलन : व्यापार में असमानता और भारत पर नेपाल की व्यापक आर्थिक निर्भरता नेपाली नीति-निर्माताओं के लिए चिंता का विषय हो सकती है। इस समस्या का समाधान व्यापार को बाधित करने में नहीं, बल्कि नेपाल की उत्पादन क्षमता, निर्यात और आर्थिक विविधीकरण बढ़ाने में निहित है।
- छठी चुनौती : नीतिगत निरंतरता : नेपाल में सरकारों और राजनीतिक गठबंधनों के परिवर्तन से विदेश नीति की प्राथमिकताओं में बदलाव आ सकता है। इसी प्रकार भारत में भी विभिन्न समयों पर क्षेत्रीय कूटनीति के साधनों और प्राथमिकताओं में परिवर्तन संभव है। इसलिए दीर्घकालिक परियोजनाओं तथा समझौतों को संस्थागत आधार देना आवश्यक है।

भारत-नेपाल संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण

भारत-नेपाल संबंधों का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक निकटता अपने आप स्थायी राजनीतिक विश्वास सुनिश्चित नहीं करती। दोनों देशों के समाजों के बीच गहरे संपर्क हैं, लेकिन सरकारी नीतियों और राष्ट्रीय हितों को लेकर मतभेद भी मौजूद हैं। इसीलिए द्विपक्षीय संबंधों को भावनात्मक निकटता के साथ-साथ यथार्थवादी राजनीतिक विश्लेषण की भी आवश्यकता है। भारत की दृष्टि से नेपाल के साथ निकट संबंध क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक संपर्क और हिमालयी क्षेत्र की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण हैं। नेपाल की दृष्टि से भारत के साथ सहयोग आवश्यक है, लेकिन उसके लिए राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वतंत्र निर्णय क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। दोनों दृष्टिकोण अपने-अपने राष्ट्रीय हितों से प्रभावित हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब एक पक्ष की सुरक्षा संबंधी चिंता दूसरे पक्ष को राजनीतिक दबाव के रूप में दिखाई देने लगती है। आर्थिक परस्पर निर्भरता संबंधों को स्थिर बनाने में मदद कर सकती है, लेकिन अत्यधिक असमान निर्भरता अविश्वास को भी बढ़ा सकती है। वर्ष 2015-2016 के सीमा व्यवधान के अनुभव ने इस प्रश्न को विशेष महत्व दिया। इसी प्रकार नेपाल द्वारा वैकल्पिक संपर्क और ऊर्जा स्रोतों की तलाश को उसकी आर्थिक सुरक्षा की रणनीति के रूप में समझा जा सकता है। भारत को भी यह पहचानना चाहिए कि विविध आर्थिक साझेदारियाँ विकसित करना किसी संप्रभु देश का सामान्य अधिकार है। दूसरी ओर, नेपाल की विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने के लिए आर्थिक परियोजनाओं की व्यवहार्यता और दीर्घकालिक लाभों का निष्पक्ष मूल्यांकन आवश्यक है। भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा का उपयोग वार्तात्मक लाभ प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन केवल रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के आधार पर निर्णय लेना नेपाल के विकास हितों के अनुकूल नहीं होगा। इस प्रकार भारत-नेपाल संबंधों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों देश असहमति के बावजूद सहयोग को कितना आगे बढ़ा पाते हैं। स्थायी संबंधों के लिए समानता का अर्थ दोनों देशों की समान आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि निर्णय प्रक्रिया में सम्मान, संवाद और पारस्परिक हितों को उचित स्थान देना है।

भारत-नेपाल संबंधों को मजबूत बनाने के लिए सुझाव

भारत-नेपाल संबंधों को अधिक स्थिर और सकारात्मक बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं :-

1. नियमित उच्चस्तरीय संवाद : दोनों देशों को राजनीतिक नेतृत्व, विदेश मंत्रालयों और संबंधित संस्थाओं के बीच नियमित वार्ता बनाए रखनी चाहिए। इससे मतभेदों को गंभीर संकट में बदलने से पहले सुलझाने में सहायता मिलेगी।
2. सीमा विवादों का शांतिपूर्ण समाधान : सीमा संबंधी प्रश्नों पर संयुक्त तकनीकी समितियों को ऐतिहासिक दस्तावेजों, मानचित्रों और अन्य उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कार्य करना चाहिए। किसी भी एकतरफा कार्रवाई से बचना और वार्ता के लिए अनुकूल वातावरण बनाए रखना आवश्यक है।
3. 1950 की संधि की रचनात्मक समीक्षा : दोनों देशों की सहमति से संधि के प्रावधानों और बदलती परिस्थितियों के बीच संबंधों की समीक्षा की जा सकती है। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक संबंधों को कमजोर करना नहीं, बल्कि उन्हें वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाना होना चाहिए।
4. आर्थिक सहयोग का संतुलित विस्तार : भारत को नेपाली निर्यात, उद्योग, कृषि प्रसंस्करण और स्थानीय उद्यमों को प्रोत्साहित करने वाले सहयोग पर ध्यान देना चाहिए। नेपाल को भी अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाकर व्यापारिक असंतुलन कम करने के प्रयास करने चाहिए।

5. ऊर्जा क्षेत्र में दीर्घकालिक सहयोग : विद्युत व्यापार, जलविद्युत परियोजनाओं और प्रसारण नेटवर्क के विकास में पारदर्शिता तथा स्थिर नीतिगत व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए। पर्यावरणीय प्रभाव और स्थानीय समुदायों के हितों को भी उचित महत्त्व देना चाहिए।
6. खुली सीमा का बेहतर प्रबंधन : सीमा सुरक्षा को मजबूत करते हुए सामान्य नागरिकों, विद्यार्थियों, व्यापारियों और श्रमिकों के वैध आवागमन को सरल बनाया जाना चाहिए। स्थानीय प्रशासन के बीच सहयोग से सीमापार अपराधों पर नियंत्रण अधिक प्रभावी हो सकता है।
7. चीन के संदर्भ में व्यावहारिक कूटनीति : भारत को नेपाल के अन्य देशों के साथ वैध आर्थिक संबंधों को उसकी विदेश नीति की स्वतंत्रता के संदर्भ में समझना चाहिए। नेपाल को भी सभी साझेदारियों में वित्तीय स्थिरता, राष्ट्रीय हित और परियोजनाओं की दीर्घकालिक व्यवहार्यता को प्राथमिकता देनी चाहिए।
8. जन-से-जन संपर्क को प्रोत्साहन : शिक्षा, पर्यटन, संस्कृति, स्वास्थ्य और युवा आदान-प्रदान के कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए। सीमावर्ती समुदायों की समस्याओं और अनुभवों को नीतिगत चर्चा में स्थान देने से पारस्परिक विश्वास मजबूत हो सकता है।
9. आपदा प्रबंधन में सहयोग : भूकंप, बाढ़, भूस्खलन और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए संयुक्त प्रशिक्षण, सूचना साझा करने और राहत समन्वय की व्यवस्थाओं को मजबूत किया जाना चाहिए।
10. समझौतों का समयबद्ध क्रियान्वयन : द्विपक्षीय बैठकों में लिए गए निर्णयों की नियमित समीक्षा होनी चाहिए। परियोजनाओं की प्रगति, वित्तीय स्थिति और स्थानीय लाभों की जानकारी पारदर्शी रूप से उपलब्ध कराने से दोनों देशों के बीच जवाबदेही बढ़ेगी।

निष्कर्ष

भारत-नेपाल संबंध दक्षिण एशिया की राजनीति में ऐतिहासिक निकटता, आर्थिक परस्पर निर्भरता और रणनीतिक जटिलता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संपर्कों ने द्विपक्षीय संबंधों को विशिष्ट आधार प्रदान किया है। वर्ष 1950 की शांति एवं मैत्री संधि ने इस संबंध को औपचारिक स्वरूप दिया, लेकिन समय के साथ राजनीतिक परिवर्तन, राष्ट्रीय हितों की अलग-अलग व्याख्याएँ और बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियाँ संबंधों को प्रभावित करती रही हैं। वर्ष 2015 के बाद सीमा विवादों, राजनीतिक अविश्वास और चीन की बढ़ती भूमिका ने भारत-नेपाल संबंधों में नई चुनौतियाँ उत्पन्न कीं। इसके बावजूद दोनों देशों ने ऊर्जा, व्यापार, संपर्क परियोजनाओं और सुरक्षा सहयोग के क्षेत्रों में संवाद जारी रखा। वर्ष 2024 का दीर्घकालिक विद्युत व्यापार समझौता तथा वर्ष 2025 की गृह सचिव स्तर की वार्ता इस बात के उदाहरण हैं कि राजनीतिक मतभेदों के बीच भी व्यावहारिक सहयोग को आगे बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत-नेपाल संबंधों को केवल ऐतिहासिक मित्रता या सामरिक प्रतिस्पर्धा के दृष्टिकोण से देखना पर्याप्त नहीं है। इन संबंधों में सहयोग और मतभेद दोनों मौजूद हैं। भारत की क्षेत्रीय शक्ति और नेपाल की रणनीतिक स्वायत्तता के बीच संतुलन स्थापित करना द्विपक्षीय कूटनीति की केंद्रीय चुनौती है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह नेपाल की संप्रभुता, राजनीतिक संवेदनशीलताओं और विकास संबंधी प्राथमिकताओं का सम्मान करते हुए सहयोग को आगे बढ़ाए। नेपाल के लिए भी आवश्यक है कि वह अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को आर्थिक व्यवहार्यता, क्षेत्रीय सहयोग और स्थिर द्विपक्षीय संबंधों के साथ संतुलित करे। दोनों देशों को यह समझना होगा कि दीर्घकालिक विश्वास केवल घोषणाओं से नहीं, बल्कि समयबद्ध समझौतों, पारदर्शी नीतियों और पारस्परिक सम्मान से निर्मित होता है। भारत-नेपाल संबंधों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों देश असहमति को संघर्ष में बदलने के बजाय संवाद और सहयोग का माध्यम बना पाते हैं या नहीं। समानता, विश्वास, आर्थिक

साझेदारी और संस्थागत कूटनीति पर आधारित संबंध न केवल दोनों देशों के लिए लाभकारी होंगे, बल्कि दक्षिण एशिया में शांति, स्थिरता और क्षेत्रीय सहयोग को भी मजबूत करेंगे।

संदर्भ सूची :

1. Borderline Politics: Reading Nepal-India Relations as ‘Energohistory’. (2022). The Journal of Historical Geography. Taylor & Francis.
2. Associated Press. (2024, January 5). India’s Foreign Minister Signs a Deal to Increase Imports of Electricity from Nepal. AP News.
3. Taneja, N., Prakash, S., Bimal, S., Garg, S., Roy, R., et al. (2020). Indo-Nepal Trade and Investment: An Analysis. India Quarterly: A Journal of International Affairs, 76(2).
<https://doi.org/10.1177/0974928420917799>
4. Gurung, W. F., & Ranjan, A. (2020). Resetting the Relationship: India’s Recent Engagements with Nepal. Institute of South Asian Studies, National University of Singapore.
5. Thapliyal, S. (2020). India-Nepal Relations: A View from New Delhi. Institute of Peace and Conflict Studies.
6. Nayak, S. (2020). India and Nepal’s Kalapani Border Dispute: An Explainer. Observer Research Foundation, Issue Brief No. 356.
7. Shekhawat, S. (2024). Reimagining India-Nepal Ties: The Decade That Was and the Road Ahead. Observer Research Foundation.
8. Government of India, Ministry of External Affairs. (1950). Treaty of Peace and Friendship between the Government of India and the Government of Nepal. New Delhi.
9. Government of India, Ministry of External Affairs. (2024). India-Nepal Bilateral Relations: Open Bilateral Brief, 20 June 2024. New Delhi.
10. Government of India, Press Information Bureau. (2025, July 23). India and Nepal Holds Home Secretary Level Talks in New Delhi. Ministry of Home Affairs.
11. Government of India, Prime Minister’s Office. (2018, April 7). India-Nepal Joint Statement during the State Visit of Prime Minister of Nepal to India.